# Bihar Board Class 7 Sanskrit Notes Chapter 7 दीपोत्सवः

## दीपोत्सवः Summary

[प्रस्तुत पाठ में प्रसिद्ध भारतीय उत्सव दीपावली का वर्णन है। इसकी प्राचीन परम्परा वर्षाकाल में उत्पन्न दूषित तत्त्वों के विनाश तथा हर्षोल्लास प्रकट करने के ०देश्य की पूर्ति करती थी। आज आनन्द का प्रकाश तो है किन्तु दीपकों के स्वरूप बदलने तथा पटाखा आदि के अनियन्त्रित प्रयोग से वायुमंडल दूषित हो जाता है। अतः इसके मनाने का स्वरूप बदलना चाहिए ।

अस्माकं समारोहेषु दीपोत्सव: विशिष्ट:.....दीपानां मालाः शोभन्ते ।

शब्दार्थ-नाम्ना : नाम से । ज्ञायते – जाना जाता है । विपणिषु । बाजारों में । चत्वरेषु = चौराहों पर, चबूतरों पर । आपणेषु – दुकानों में ।
सरलार्थ-हमारे त्यौहारों में दीपोत्सव विशिष्ट त्यौहार है । दीपोत्सव दीपावली या दिवाली नाम से जाना जाता है । प्रकाश का यह उत्सव बच्चों के मन को हर लेता है । घरों में, हाटों में, चौराहों पर, बाजारों में दीपों की माला शोभती हैं ।

कार्तिकमासस्य अमावस्यायां ..... सर्वत्र निर्मलता निवसति ।

शब्दार्थ-शारदीयः = शरत्कालीन । कीटपंतगानाम् = कीड़ों-फतिंगों का
। सुधया (सुधा + तृतीया) = चूने से । लिम्पन्ति – लीपते । लीपती हैं । कपाटः – किवाड़। गवाक्षः = खिडकी । रञ्जयन्ति – रंगते. / रंगती हैं । इतस्ततः – इधर-उधर । प्रक्षिप्तम् – बिखरा । बिखरे (को) । अपद्रव्यम् – कूड़ा-करकट । अपसारयन्ति = दूर हटाते । हटाती हैं। सरलार्थ-कार्तिक महीने के अमावस्या तिथि को प्रतिवर्ष भारतीय इस उत्सव का आयोजन करते हैं/मनाते हैं । यह शरद्कालीन उत्सव है ।

वर्षा ऋतु में सभी जगह वर्षा के प्रभाव से गंदगी और कीड़े-मकोड़े फैल जाते हैं। जब शरद् ऋतु आती है तो लोग अपने घरों और आस-पास की सफाई करते हैं। वे घरों को चूने से लेपते हैं। किबाड़ और खिड़कियों को रंगते हैं । इधर-उधर फैले कूड़ा-करकट दूर हटाते हैं । सभी जगह स्वच्छता रहती है।

नवं वस्त्रं मिष्टान्नं च .....सर्वत्र बन्धुभाव: विराजते ।

शब्दार्थ-नवम् – नया । मिष्टान्नम् – मिठाई । मुदिताः – प्रसन्न,खश । सरलार्थ-नए कपड़े और मिठाइयाँ प्राप्त करके बच्चियाँ प्रसन्न होती हैं। वे पटाखे विस्फोट करके आनन्द का अनुभव करते हैं । लोग परस्पर शुभकामनाएँ देते हैं । सर्वत्र बन्धुता की भावना विराजमान रहती है।

रावणवधानन्तरं रामचन्द्रस्य ..... केचन देवी कालिकां पूजयन्ति ।

शब्दार्थ-जनश्रुतिः – जन-प्रसिद्धि । तदा प्रभृति = तब से । निस्सारयन्ति – निकालती / निकालते हैं । सरलार्थ-रावण के वध के बाद रामचन्द्र के अयोध्या आगमन पर प्रथम दीवोत्सव का आयोजन हुआ था । ऐसी जनश्रुति है । तब से हमलोग इसका आयोजन करते हैं । इस पर्व में लोग अपने घरों को दीपमालाओं से सजाते हैं। धन की देवी


https://www.evidyarthi.in/

लक्ष्मी की पूजा करते हैं । गरीबी को निकालते हैं । यह रात सुखरात्रि के नाम से विख्यात है । मिथिला और बंगाल में कुछ लोग कालिका देवी की पूजा करते हैं ।

वर्षाकाले वृद्धिम् उपगतानां .....स्वरक्षणाय पर्यावरणरक्षणं परमं कर्तव्यम् ।

शब्दार्थ-वर्तिका – बत्ती । परमम् = सबसे बड़ा । लब्वा = प्राप्त करके । आयाति – आता है । वृद्धिम् उपगतानाम् (वृद्धिम् उपगतानाम्) – बढ़े हुए का । वर्धते = बढ़ता है । सावधानेन – सावधानी से । भवितव्यम् – होना चाहिए । समायोजयन्ति = मनाते हैं । रावणवधानन्तरम् (रावणवध अनन्तरम्) = रावण के वध के बाद । पर्वणि – पर्व में ।

अलङ्कुर्वन्ति = सजाते हैं । प्रसारः = फैलाव, वृद्धि । सरलार्थ-वर्षाकाल में बढ़े हुए कीट-पतंगों का पहले तेल की बती से विनाश होता था । उनसे वातावरण शुद्ध होता था । आज तो हमलोग मोमबत्ती और विद्युतदीपों का प्रयोग करते हैं। उल्लास प्रकट करने के लिए पटाखे चलाते हैं । इनसे वातावरण में दूषित पदार्थ बढ़ते हैं। कीड़े नहीं नष्ट होते हैं । वातावरण विषयुक्त हो जाता है । ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ता है। अत: सावधान होना चाहिए। अपनी रक्षा के लिए पर्यावरण की रक्षा करना श्रेष्ठ कर्त्तव्य है।

व्याकरणम्

सन्धि-विच्छेदः

1. दीपोत्सव = दीप + उत्सवः (गुणं सन्धि)
2. प्रकाशोत्सवः = प्रकाश + उत्सवः (गुण सन्धि)
3. प्रसारश्च = प्रसारः + च (विसर्ग सन्धि)
4. इतस्ततः = इत: + ततः (विसर्ग सन्धि)
5. मिष्टान्नम् = मिष्ट + अन्नम् (दीर्घ सन्धि)
6. अयोध्यागमने = अयोध्या + आगमने (स्वर सन्धि)
7. निस्सारयन्ति = निः + सारयन्ति (विसर्ग सन्धि)

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः ज्ञायते –


https://www.evidyarthi.in/

ज्ञायते = $\sqrt{ज्ञा}$, यक् लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
हरति = $\sqrt{हृ}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
शोभन्ते = $\sqrt{शुभ्}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
समायोजयन्ति= सम् + आ + $\sqrt{युज्}$ + णिच्, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
लिम्पन्ति = $\sqrt{लिप्}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
रञ्जयन्ति = $\sqrt{रंज}$ + णिच्, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
अपसारयन्ति = अप + $\sqrt{सृ}$ + णिच्, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
निवसति = नि + $\sqrt{कृ}$ लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
भ्रमन्ति = $\sqrt{भ्रम्}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

प्रकटयन्ति = प्र $\sqrt{कट्}$, णिच्, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
विराजते = वि + $\sqrt{राज्}$ + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
पूजयन्ति = $\sqrt{पूज्}$, + णिच्, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
निस्सारयन्ति = निः + $\sqrt{सृ}$ + णिच्, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
नश्यन्ति = $\sqrt{नश्}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
वर्धते = $\sqrt{वृध्}$, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
भवितव्यम् = भू + तव्यत्
कर्तव्यम् = कृ + तव्यत्
मुदिताः = मुद् + क्त (बहुवचन)
कृत्वा = कृ + क्त्वा
लब्ध्वा = लभ् + क्त्वा

evidyarthi


https://www.evidyarthi.in/